International Journal on Science and Technology (IJSAT)

E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

# भारतीय समाज और महिला विकास

**डॉ रंजना सी धोलकिया**

आसी.प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, समाजविधा भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

**सारांश :**

भारत के विकास में महिलाओं की समान भागीदारी की आवश्यकता को एक लंबे अरसे से महसूस किया जा रहा है। समानता का आधार आर्थिक हो या सामाजिक, इस पर बहस निरंतर जारी है। गहराई से देखने पर ही इस बात को समझा जा सकता है कि देश को समृद्ध बनाने के लिए महिलाओं को दोनों ही स्तरों पर भेदभाव से मुक्त करना होगा। समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र ऐसे हैं जहां महिलाओं को अक्सर उनके पदों पर स्वीकार किया जाता है। जब उन्हें इन क्षेत्रों में भाग लेने की आवश्यकता होती है, तो उनके पास प्रभावी प्रतिभा और क्षमताएं होनी चाहिए जो उन्हें ऐसा प्रभावी ढंग से करने की अनुमति दें। महिलाओं को अपने कौशल और प्रतिभा के अलावा अपनी भागीदारी को प्रभावित करने वाले चरों के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए। अपने कार्यों को करते समय आने वाली बाधाओं को दूर करने की क्षमता भी इन तत्वों के ज्ञान से ही संभव होती है। जब महिलाएं कई तरह की जिम्मेदारियां निभाती हैं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने परिवारों और समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने में सफलतापूर्वक योगदान दें।

भारत में महिलाओं की स्थिति को भेदभाव से मुक्त करने का बीड़ा सबसे पहले राजा राममोहन राय ने उठाया था। समाज में महिलाओं की भूमिका को पहचानने का दूसरा अवसर तब आया,जब गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन को 'एक टांग पर खड़ा' बताया था। सन् 1947 में महिलाओं को मत का समानाधिकार देकर उनके महत्व को स्थापित किया गया। इसके बाद 2014 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ से महिलाओं को शक्तिसंपन्न करने का काम शुरू हुआ। इसका अगला कदम पुरूषों की मानसिकता को बदलने, तीन तलाक, अधिक रोजगार, अधिक महिलाओं को स्वउद्यमी बनाने, स्कूलों में लड़कियों की भर्ती को बढ़ाने पर काम करने के मार्ग से होकर भारत की समृद्धि के द्वारा खोलेगा।

**मूखय शब्दों:** महिला विकास, सशक्तिकरण, लैंगिक पक्षपात, अधिकार

**प्रस्तावना**

महिला विकास या सशक्तिकरण का मतलब होता है महिलाओं का पारिवारिक बंधनों से मुक्त होकर अपने और अपने देश के विषय में सोचने की क्षमता का विकास। अर्थात महिला सशक्तिकरण से हम ये से समझते है कि महिलाएं अपने निर्णयो के लिए किसी अन्य पर निर्भर ना हो और वह अपने जीवन के विषय में खुद निर्णय ले सकें। महिलाओं को सशक्त बना ना परिवारों, समुदायों और देशों के स्वास्थ्य और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। जब महिलाएं सुरक्षित, पूर्ण और उत्पादक जीवन जी रही हैं, तो वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकती हैं।

विचार और नीतियों के स्तर पर महिलाओं के विकास लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। परन्तु इनमें से कोई भी एजेंडा महिला विकास या महिला सशक्तिकरण को तब तक सफल नहीं बना सकता, जब तक कि अध्ययनों से जुड़े इन तीन कारणों पर ध्यान नहीं दिया जाता। (1) महिलाओं को वैतनिक काम की गारंटी मिले। अभिभावक भी लड़कियों पर तभी अधिक खर्च करेंगे, जब उन्हें उनसे आर्थिक संबल मिलने की उम्मीद होगी। (2) आरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इस क्षेत्र में किए गए अध्ययन बताते हैं कि राजनीति में महिलाओं को आरक्षण दिए जाने से माता-पिता की मानसिकता में बहुत बदलाव देखा गया। इससे कुछ राज्यों में तो शैक्षिक स्तर पर लैंगिक अंतर समाप्त ही हो गया। (3) ग्रामीण युवा पुरूषों के लिए कई मुद्दे विषम लिंगानुपात से जुड़ी सामाजिक समस्याओं से संबंधित हैं।

**भारतीय समाजमे महिला विकासकी दशा और दिशा**

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्योसे समृध्ध देश है, जहा नहिलाओंका समाजमें प्रमुख स्थान रहा है । गार्गी, अपाला, मैत्रेयी, घोषा जेसी विदुषियों की ख्याति जग प्रसिध्ध है। महिलाको देवी का दरज्जा दिया जाता था। महिलाओं को विदुषी, माता, शिष्य, गुरु का दरज्जा प्राप्त था। प्राचीन काल मे स्त्रिका मान सन्मान अधिक था और समाजके उत्थान के सभी क्षेत्र मे महिलाकी अतूल्य भूमिका रही है , दुर्भाग्य वश विदेशी शासन काल दरम्यान भारतमें महिला की स्थिति दयनीय हुई जिनके शासन काल मे समाज मे भारतीय समाजमे कई सारी कुरीतियां पैदा हुई, मध्य युगमे भक्ति आंदोलन ने महिलाओंकी स्थितिकों सुधारने का प्रयास जरूर किये किन्तु वह इतने सफल नहीं रहे और महिलाएं घरकी चार दीवाल तक सीमित रह गई । उसी समय पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, जौहर और देवदासी जेसी रूढ़िचुस्त रीति नीति प्रचलन में आए। जिससे महिला उत्पीड़नने अपनी परम सीमा की हद को पार की दी थी । महिलाएं ही संतति की परम्परा में मुख्य भूमिका निभाती हैं फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक महिलाएं उपेक्षित ही रही हैं। उन्हें कम से कम सुविधाओं, अधिकारों और उन्नति के अवसरों में रखा जाता रहा है, इसी कारण महिलाओं की

परिस्थिति अत्यन्त निचले स्तर पर है। भारतीय समाज के समाज सुधारक के सामाजिक सुधारके अविरत प्रयास और कानूनी सहयोग से यह कुरीतियां को दूर करनेमे बड़ा योगदान रहा।

भारतकी लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। समाज के विकास में उनका भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ये महिलाएं ही परिवार बनाती है और परिवार से घर, घर से समाज और वही समाज से ही देश बनता है । महिलाके बिना परिवार ,घर, समाज या देशका विकास नहीं हो सकता। स्वतन्त्रता संग्राम के दरम्यान कई महिलाए स्वतन्त्रता संग्रामके आंदोलन मे जो उत्साह पूर्ण भागीदारी निभाई थी और देशके लिए अपना सर्वस्व त्याग देते थे। महिलाओं की इस तरह की क्षमताको नजर अंदाज करके समाजकी कल्पना करना असंभव है।

महिलाकी सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मज़बूत समाज की द्योतक है। वर्तमान में नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में नवीन चेतना भर दी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है।निर्माण गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका को ध्यान में रखते हुए सरकार ने वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया था और महिलाओं को स्वशक्ति प्रदान करने की राष्ट्रीय नीति अपनायी थी।

महिलाओंके प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति की यह चरमपरिणति ही है कि यह समाज उनको जन्म लेने से पहले ही मारने जैसे घिनौना कर्म कर रहा है । स्त्री शिक्षा के मार्ग में एक प्रमुख अवरोधक तत्व भारतीय समाज में व्याप्त गरीबी एवं निर्धनता है । आज भी 20 प्रतिशत भारतीय गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने का मजबूर हैं। हत्या, घरेलू हिंसा, दहेज, यौन प्रताड़ना,वैवाहिक बलात्कार, जननांग विकृति वैधव्य जैसी और बहुत कुछ है जिससे गुजरना पड़ता है. लैंगिक पक्षपात और भेदभाव: भारतीय औरतों को लैंगिक भेदभाव के मुद्दे से भी गुजरना पड़ता हैं. भारत में महिलाओं को पुरुषों के बराबर नहीं माना जाता है।

आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा, लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है । भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही

महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले और प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरागांधी,प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बडे उदाहरण स्थापित किए है। कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिलाओं डाक्टरों, नर्सो, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व समाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की प्रवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी है। कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। महिमा दतला, एमडी, बायोलॉजिकल ई, ने 12-18 वर्ष की आयु के लोगों को दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन विकसित करने के लिए अपनी टीम का नेतृत्व किया। निस्संदेह, महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं।

छठी आर्थिक गणना के अनुसार, हमारे पास देश में 8.05 मिलियन महिला उद्यमी हैं। शॉपक्लूज, घर और रसोई, दैनिक उपयोगिता वस्तुओं की मार्केटिंग के लिए 2011 में राधिका ऑनलाइन स्टार्ट -अप शुरू किया गया। यह यूनिकॉर्न क्लब में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय महिला उद्यमी थीं। राजोशी घोष के हसुरा, स्मिता देवराह के लीड स्कूल, दिव्या गोकुलनाथ के बायजू और राधिका घई के 'शॉपक्लूज' अन्य यूनिकॉर्न हैं, जो महिला स्टार्टअप की क्षमता के बारे में बहुत कुछ बयां करते है। महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्रों मे पावं रखने के लिए महिला स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण है। अब महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी **2030** तक लगभग **150-170** मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। एक आधिकारिक अनुमान के अनुसार, **2018-21** तक स्टार्टअप्स द्वारा लगभग **5.9** लाख नौकरियां पैदा की गईं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-**2020** के माध्यम से शुरू से ही उद्यमिता के बीज बोने का सार्थक प्रयास किया जा चुका है। हाल ही में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में आयोजित दीक्षांत समारोह में **24** छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। जिनमें से **16** लड़कियां थीं। यह सिर्फ एक विश्वविद्यालय की बात नहीं है। वे लगभग हर संस्थान में लड़कों से कहीं बेहतर कर रही हैं। उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा और दृढ़ता है।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबुती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले **6-7** वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अभियान और तेज हुआ है। आज देश भर में **70** लाख स्वयं

सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। ऐसी महिलाओं जिसने अपने अपने क्षेत्रमें उच्च स्थान प्राप्त किए है उनका प्रतिशन 10 या 12 प्रतिशत ही है । पर जो भी सिध्धी प्राप्त की है वह प्रसंशनीय है।

भारत की कई एसी महिलाएं है जिन्हों ने समाजके विभिन्न क्षेत्रो में अपना योगदान देकर पुरुष वर्गके समान कंधे से कंधा मिलाने का पूर्ण प्रयास किए है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी **(1865-1887**) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक रही है। भारतमें 21% महिलाएं **IAS** ओफ़िसर्स की उपाधि प्राप्त कर चुकी है जेसे की वहीवटी क्षेत्र में अन्ना राजम मल्होत्रा ( स्वतंत्र भारतकी प्रथम **IAS** ओफ़िसर ) ईसा बसंत जोशी,(ब्रिटिश समयकी प्रथम महिला **IAS** ओफ़िसर) किरण बेदी ( भारतकी प्रथम महिला **IPS** ओफ़िसर) डॉ रुवेदा सलाम (आसिस्टेंट पोलिस कमिशनर चेन्नई) इरा सिंघल, स्वाति मीना, ईसा पंत,स्मिता सभरवाल, सी बी मुठममा, निरूपमा राव, ममता यादव, ऐश्वर्या शेओरण जिसने राष्ट्र की समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है। खेल जगत में, मेरी कॉम, पी वी सिंधु, कर्णम मल्लेश्वरी, सानिया मिर्ज़ा, साइना नेहवाल, साक्षी मलिक, सुधा सिह, पी अनीता, मौमा दास आदिका योगदान प्रसंशीय है। भारतीय महिला अंतरिक्षयात्रीयोमें कल्पना चावला ,सुनीता विलियम्स सीरिशा बांदला का नाम विख्यात है। गायिकी में लत्ता मंगेशकरजी, आशा भोशले, कविता कृष्णमूर्ति, अलका याज्ञीक, उषा उत्थुप, सुनिधि चौहान आदिके नाम प्रचलित है, नृत्यमें लीला सैमसन, वयजंती माला, हेमा मालिनी, मल्लिका साराभाई, मालविका सरकार, यमिनी कृष्ण मूर्ति ,सोनल मान सिंह, रुकमणि देवी अरुंडेल आदि विख्यात है, तो महिला वेज्ञानिक में टेसी थॉमस, रितु करिधल, मुथेया वनिता, गगनदीप कांग, मंगला मणि, कामाक्षी शिवरामकृष्णन, चंद्रिमा शाह, अदिति पंत आदिने अपने कार्यक्षेत्र में नाम रोशन किया है। भारतीय महिला लेखिका और कवयित्री जो जग प्रसिध्ध है उसमे सरोजिनी नायडू, अमृता प्रीतम, शोभा डे, महादेवी वर्मा, अरुंधिति रॉय, महाश्वेतादेवी जगप्रसिद्ध है। भारत की महिला पर्वतारोही में बछेंद्री पाल, अरुणिमा सिन्हा, प्रेमलता अग्रवाल, संगीता बहल, मालालवथ पूर्णा, संतोष यादव,काम्या कार्तिकेयन, अंशु जामसेंपा, नुंग्शी औरत ताशी मलिक का नाम प्रसिध्ध है। इस तरह राजनीतिके क्षेत्र में भारत की कई ऐसी महिलाएं है जिसने राष्ट्रीय और आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व प्रदान किया है। उन्हीमें मुख्यतः श्रीमति इन्दिरा गांधी, अरुणा असफ अली, विजया लक्ष्मी पंडित, नझमा हेपतुल्ला, शीला दीक्षित, ममता बेजरजी, मायावती, जयललिता, वशुंधारा राज सिंधिया, सोनिया गांधी, सुषमा स्वराज, श्रीमति प्रतिभा पाटिल, मेनका गांधी, मीरा कुमार, निर्मला सितारामन, श्रीमति

सुमित्रा महाजन, अंबीका सोनी, मणिबहेन पटेल, आनदी बेन पटेल, जयललिता, उमाभारती आदि का समावेश किया जाता है ।

श्रीमती सरोजिनी नायडु- प्रथम महिला राज्यपाल, श्रीमती इंदिरा गांधी - प्रथम महिला प्रधानमंत्री, श्रीमती सुचेता कृपलानी- प्रथम महिला मुख्य मंत्री, श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित-संयुक्त राष्ट्र संधकी सामान्य सभा की प्रथम महिला अध्यक्ष, श्रीमती वायलेट अल्वा -राज्यसभा की प्रथम महिला उपसभापति , श्रीमती शन्नो देवी -प्रथम एकम राजयकी विधानसभा की महिला स्पीकर, राजकुमारी अमृत कौर- प्रथम महिला केन्द्रीय मंत्री, मुतुलक्ष्मी रेड्डी- प्रथम महिला विधायक, सु श्री मायावती- प्रथम महिला दलित मुख्य मंत्री के रूप में- यह सारी महिलाओं ने सक्रिय राजनीतिमे में अपना अमूल्य योगदान दिया है वह सराहनीय है और वर्तमान मे भी कई महिलाएं जो राजनीतिमे सक्रिय बनकर अपना महत्तम योगदान देने का प्रयास कर रही है श्रीमती इंदिरा गांधी ने सच ही कहा था की -“ जब आप एक कदम आगे की और बढ़ते हो, तो किसी न किसी चीज में तबदीली आना स्वाभाविक है, हमे यह नहीं भूल जाना चाहिए की भारत में ताकत का प्रतीक एक महिला है।“ (1) आज महिलाएं वही दिशा की और बढ़ रही है वह प्रशंसनीय है

गांधीजीने कहा की-“ मुझे महिला और पुरुष कें कुदरती भेद मान्य है, किन्तु अन्य भेदे स्वीकार्य नहीं,” (2 ) आगे उन्होने यह कहा की “ महिला और पुरुष का दरज्जा एक ही है किन्तु वह एक नहीं, पर दोनों परस्परावलंबी है, एक दूसरे के पूरक है दोनों की जरूरियाते समान और महत्व की है ,दोनों के बीच कोई पडदा या स्पर्धा नहीं होनी चाहिए , महिला पुरुषकी गुलाम नहीं, किन्तु सहभागिता है।“ (3)

आवाज संस्थाकी कानूनी सलाहकार सोफिया खान का कहना हे की” आर्थिक आत्मनिर्भरता से कही अधिक सामाजिक स्तर में महिलाओं को उचित स्थान प्राप्त होना आवश्यक है । क्योंकि कई पढ़ी -लिखी शिक्षित महिलाएँ आर्थिक रूपसे आत्मनिर्भर होती है, लेकिन फिर भी पारिवारिक हिंसा से पीड़ित होती है । इसका मूल कारण है की बचपन से लड़कियों को सब कुछ सहन करने की जो शिक्षा दी जाती है , उसके कारण अन्याय बर्दाश्त करना, उसकी मानसिकता बन जाती है। इन मानसिकताको दुर करके ही महिलाओं को हिंसा मूक्त किया जा शकता है और इस प्रकार के विचार परिवर्तन के लिये उनमें जागृति लाना अति आवश्यक है। “ ( 4)

आज महिलाओं के लिये समानता, सुरक्षा से संबन्धित सभी अधिकारो को पुनः नये परिप्रेक्ष्य में विचार करने की आवश्यकता हें। समाजकी ऐसी विषम परिस्थितिमें हमे साहसी, समझदार और शिक्षित महिला नेतृत्व की जरूरत हे जो इस पुरुष प्रधान समाज मे चल रहे इस गैरबराबरी का खातमा कर शके और समाज से दबी हुई, कुचली हुई, हाशिये की महिलाओं को राजकीय सत्ता की मूखय धारा में

ला शके, शर्त इतनी हे की महिलाएं अपनी सोच- विचारको सन्मान दे ,उसका अमलिकरण करे, तभी समाजमें लैंगिक असमानता दूर हो शकेंगी।

1918 में भगिनी महिला समाज को संबोधित करते हुये गांधीजी ने कहा था कि, "रीतियों और हिन्दू कानून के मातहत महिलाओं को कुचला गया हें, जिसके लिये पुरुष जिम्मेदार हें । इसमें महिलाओं का कोई हाथ नहीं हें।'(5 )गांधीजीका यह भी मानना था की -"हिंद की महिलाओं का जो विकास किया जाए और महिलाओंका सुषुप्त आत्मबल जागृत हो जाए तो व देशकी काया पलट कर सकती है। " (6) "डॉ इला पाठकका कहना है की खुद महिला ही अपने सुषुप्त आत्मबलको जगाकर स्वयं को हिंसा, शोषण, अन्याय, और लिंगभेद की दमनयुक्त रीति को दूर कर सकती है,उन्होने आगे यह भी कहा की " आजकी असमानता व अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में महिलाओं को सीता व सावित्री की भूमिका अदा नहीं करनी है, बल्कि अपने स्वावलंबन की ताकत द्वारा समाजमें योग्य स्थान प्राप्त करना है । महिला को पारस्परिक एकता द्वारा पुरुष के विरुध्ध नहीं बल्कि पुरुषप्रधान समाज के विरूध्ध लड़नेकी हिम्मत जुटानेका कार्य करना है ।" (7)

केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड-अप इंडिया, और स्टार्ट-अप सम्बन्धि कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों, की सुविधा प्रदान करता है।

"आजादी के अमृत महोत्सव" वर्ष के पहले भाग में ही केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने **6-12** सितंबर के बीच केवल एक सप्ताह में **2614** स्वयं सहायता समूह के उद्यमियों को सामुदायिक उद्यम निधि का आठ करोड़ साठ लाख रुपये का ऋण प्रदान किया। 2030 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुखता है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है।

महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। इसलिए,

2023 के वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम ''एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता' (**''Embrace Equality''**) है।

महिला और विकास ऐसी चीजें हैं जिनमें हम सिर्फ सरकार पर निर्भर नहीं रह सकते, लोगों को भी व्यक्तिगत रूप से छोटे-छोटे कदम उठाने की जरूरत है।

- शिक्षा : यह विकास की ओर पहला कदम है। एक बहुत लोकप्रिय उद्धरण भी है जो कहता है, "यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक राष्ट्र को शिक्षित करते हैं"। अगर लड़कियाँ शिक्षित होंगी तो वे यह सुनिश्चित करेंगी कि उनके बच्चे भी शिक्षित हों। इससे समुदाय और राष्ट्र में समृद्धि और विकास आएगा
- सराहना करें और समायोजन में मदद करें : लोगों को हर महिला, मां या लड़की की सराहना करने की जरूरत है। धन्यवाद कहना, आभार प्रकट करना, या तारीफ करना बहुत छोटे कदम हैं लेकिन एक बड़ा बदलाव लाते हैं, इससे उनके चेहरे पर मुस्कान आती है और इसके साथ ही आत्मविश्वास भी आता है। कुछ हासिल करने का विश्वास, अपने लिए लड़ने का विश्वास, अपनी आवाज़ उठाने का विश्वास
- महिलाओं को सशक्त बनाने वाले संगठनों का समर्थन करें : आप जरूरतमंद महिलाओं को समर्थन और सशक्त बनाने के लिए धन, अपना कुछ समय दान कर सकते हैं, या विभिन्न संगठनों को कुछ मदद दे सकते हैं। यहां तक कि सबसे छोटा कदम भी मायने रखता है

नेल्सन मंडेला ने कहा था, ''दासता और रंगभेद की तरह गरीबी भी प्राकृतिक नहीं है। यह मनुष्य की अपनी देन है, और मानव जाति के प्रयासों से इसे दूर किया जा सकता है।'' इसी प्रकार लिंग भेद भी मानवजन्य है। एक राष्ट्र वैसा ही आकार लेता है, जैसा उसके बारे में लगातार कहा जाता है। भारत भी अपने बारे में कही जाने वाली कहानियों को बदल रहा है। दृढ़ता, हिम्मत और निरंतरता से भारत के स्त्री-पुरूषों के स्तर में समानता लाने की उम्मीद की जा सकती है।(8)

**संदर्भ सूची:**

1. https//www.hindsahityadarpan.in
2. गांधीजी : " हरिजनबंधु " (30/03/1947) पृ. नं. 72
3. प्रो हिमीक्षा राव : व्याख्यान , " स्मरणिका " गुजरात समाजशास्त्र परिषदका 26 अधिवेशन सारांश 9 और 10 फेब्रुयारी , 2019 पृ . न . 18

4. डॉ ।पुष्पा मोतियानी - “““महिला विकास की नई दिशाएँ “-कर्णावती पब्लिकेशन, अहमदाबाद 1998,पृ. नं. 126
5. गांधी एम के : ” महिलाएं और सामाजिक अन्याय ” यंग इंडिया सप्टेम्बर ,15, 1921, नवजीवन पब्लिसिंग हाउस, अहमदाबाद ,1942, पृ न -12
6. मनुबहेन गांधी: गांधीजीनु गृह माधुर्य पृ नं -13
7. Pathak Illa: The voice of strength. “The Times of India ‘, Ahmadabad, Wednesday, March 3, 993. Page No 6.
2. (८ )‘द इंडियन एक्सप्रेस’ 29 अगस्त, 2018.